# पाठ 20. सारे जहाँ से अच्छा

## पाठ का परिचय

प्रस्तुत कविता में कवि अपने देश को सारे संसार से अच्छा बता रहे हैं। कवि कहते हैं कि हमारा हिंदुस्तान एक गुलिस्ताँ (बगीचा) है और हम इस गुलिस्ताँ के पक्षी हैं। भारत की प्राकृतिक सुंदरता का वर्णन करते हुए कवि लिखते हैं कि हमारे देश के पर्वत ऊँचे हैं और नदियाँ बहुत प्यारी हैं। इन पर्वतों और नदियों के आगोश में अनेक सदियाँ गुज़र गई हैं। हमारे देश का आसमाँ कड़कने वाली बिजलियों पर हँसता है अर्थात् आने वाली हर कठिनाई को हमारा देश हँसकर सह लेता है। आक्रमणकारी विदेशियों ने इस देश को वीरान कर दिया था, लेकिन गांधी जी ने इसे नया जीवन दिया। भारत देश की रक्षा करने की कसम हर नौजवान लेता है। भारत ही वह देश है, जिसने लोगों को शांति का संदेश दिया। यही वह देश है, जिसने अहिंसा की ओर अपना पहला कदम बढ़ाया था। कवि उन जंग करने वालों से कह रहे हैं कि तुम सभी इस धरती को बचाने का प्रयत्न करो। स्वयं तुम्हारा जीवन तो अशांति, हिंसा और जंग के बीच गुज़र गया, लेकिन आने वाली पीढ़ी पर रहम खाओ। इस धरती को चमन बनाने में अपना योगदान दो।

## पाठ का वाचन

अध्यापक/अध्यापिका कक्षा में कविता का सस्वर वाचन करें। कठिन शब्दों के अर्थ बताएँ। कविता का सरलार्थ करें। कविता का भाव स्पष्ट करें। कक्षा में सभी बच्चों को कविता लयबद्ध कर सुनाने को कहें। बच्चे समूहगान के रूप में संगीत के साथ इस कविता का गायन करें।

## महत्वपूर्ण चर्चा

बच्चों से निम्न प्रश्नों पर आधारित चर्चा करें –

- कवि ने भारत देश को सारे जहाँ से अच्छा क्यों कहा है?
- तुम्हें अपने देश की कौन-सी बात सबसे अच्छी लगती है?
- अहिंसा के बारे में तुम्हारे क्या विचार हैं?
- यदि विश्व में शांति का संदेश फैलाना हो तो तुम उसके लिए क्या करोगे?